

ग्याताधर्मकथांग सूत्र (फोल्डर नं.००१२३८)

मुख्य टाईटल

समर्पण

प्रकाशकीय

सम्पादकीय : यत्किञ्चित्

आमुख

श्रीमान् सेठ खीवराजजी चोरडिया

प्रस्तावना

विषयानुक्रम

प्रथम अध्ययन : उक्षितज्ञात

सार : संक्षेप-----	१
प्रारंभ-----	७
आर्य सुधर्मा-----	७
जम्बूस्वामी-----	८
जम्बूस्वामी की जिज्ञासा-----	९
सुधर्मास्वामी का समाधान-----	१०
अभयकुमार-----	१२
धारिणी का स्वप्नदर्शन-----	१४
स्वप्न-निवेदन-----	१५
श्रेणिक द्वारा स्वप्नफलकथन-----	१६
स्वप्नपाठकों का आह्वान-----	१८
स्वप्नपाठकों द्वारा फलादेश-----	२३
धारिणी देवी का दोहद-----	२६
धारिणी की चिन्ता-----	२९
दोहद-निवेदन-----	३१
अभयकुमार का आगमन-----	३२
अभय का आश्वासन-----	३४
अभय की देवाराधना-----	३५
देव का आगमन-----	३६
अकाल-मेघविक्रिया-----	३८
दोहदपूर्ति-----	३९
देव का विसर्जन-----	४२
गर्भ की सुरक्षा-----	४२
मेघकुमार का जन्म-----	४३

जन्मोत्सव -----	४४
अनेक संस्कार-----	४६
नामकरणसंस्कार-----	४६
मेघकुमार का लालन-पालन-----	४७
कलाशिक्षण -----	४८
कलाचार्य को प्रीतिदान -----	५०
मेघकुमार का पाणिग्रहण-----	५०
प्रीतिदान -----	५२
भगवान् का आगमन -----	५३
मेघकुमार की जिज्ञासा -----	५३
कंचुकी का निवेदन -----	५४
मेघ की भगवत्-उपासना-----	५४
भगवान् की देशना-----	५५
प्रव्रज्या का संकल्प-----	५६
माता-पिता के समक्ष संकल्पनिवेदन-----	५७
माता का शोक -----	५८
माता-पुत्र का संवाद-----	५८
एक दिवस का राज्य -----	६३
राज्याभिषेक -----	६४
संयमोपकरणों की मांग-----	६५
दीक्षा की तैयारी-----	६६
प्रव्रज्याग्रहण-----	७३
मेघकुमार का उद्वेग-----	७५
प्रतिबोध : पूर्वभवकथन -----	७७
हस्तीभव में जातिस्मरण-----	८२
मंडलनिर्माण-----	८४
अनुकम्पा का फल-----	८६
पुनर्जन्म -----	८८
मृदु उपालम्भ-----	८८
पुनः प्रव्रज्या-----	८९
विहार और प्रतिमावहन -----	९१
उग्र तपश्चरण -----	९२
समाधिमरण -----	९५
पुनर्जन्म-निरूपण -----	१०१
अन्त में सिद्धि -----	१०३

द्वितीय अध्ययन : संघाट

सार : संक्षेप-----	१०४
श्रीजम्बू की जिज्ञासा -----	१०७
श्रीसुधर्मा द्वारा समाधान-----	१०७
धन्य सार्थवाह : भद्रा भार्या-----	१०८
विजय चोर -----	१०९
सन्तान के लिए भद्रा की देवपूजा-----	११३
संबंधी आज्ञा माँगना-----	११३
पति की अनुमति -----	११३
देवों की पूजा -----	११३
पुत्रप्राप्ति -----	११५
पुत्रप्रसव-----	११६
देवदत्त नामकरण-----	११६
पुत्र का अपहरण -----	११७
गवेषणा -----	११९
विजय चोर का निग्रह-----	१२१
देवदत्त का अन्तिम संस्कार-----	१२२
धन्य सार्थवाह का निग्रह -----	१२२
धन्य के घर से भोजन-----	१२३
भोजन में से विभाग-----	१२३
भद्रा का कोप-----	१२५
धन्य का छुटकारा -----	१२६
धन्य का सत्कार-----	१२६
भद्रा के कोप का शमन -----	१२७
विजय चोर की अधमगति -----	१२८
स्थविर-आगमन -----	१२९
धन्य की पर्युपासना -----	१२९
धन्य की पर्युपासना और स्वर्ग-प्राप्ति -----	१३०
उपसंहार-----	१३१

तृतीय अयन : अंडक

सार : संक्षेप-----	१३३
जम्बूस्वामी का प्रश्न -----	१३५
सुधर्मास्वामी का उत्तर-----	१३५
मयूरी के अंडे-----	१३५
मित्रों की प्रतिज्ञा-----	१३६

गणिका देवदत्ता-----	१३६
गणिका के साथ विहार-----	१३७
मयूरी का उद्वेग -----	१४०
अंडों का अपहरण-----	१४०
शंकाशील सागरदत्तपुत्र-----	१४१
शंकाशीलता का कुफल -----	१४२
श्रद्धा का सुफल-----	१४३
उपसंहार-----	१४५
चतुर्थ अध्ययन : कूर्म	
सार : संक्षेप-----	१४६
जम्बू का प्रश्न -----	१४८
सुधर्मा का उत्तर -----	१४८
कूर्मों का निर्गमन-----	१४९
पापी शृगाल -----	१४९
शृगालों की चालाकी -----	१५०
असंयत कूर्म की दुर्दशा-----	१५०
निष्कर्ष-----	१५१
संयत कूर्म -----	१५२
सारांश-----	१५२
पञ्चम अध्ययन : शैलक	
सार : संक्षेप-----	१५४
प्रारंभ-----	१५६
द्वारका नगरी-----	१५६
रैवतक पर्वत-----	१५६
श्रीकृष्ण वर्णन-----	१५७
थावच्चा पुत्र-----	१५८
अरिष्टनेमि का समवसरण-----	१५८
कृष्ण की उपासना -----	१५९
थावच्चापुत्र का वैराग्य -----	१६१
कृष्ण द्वारा वैराग्यपरीक्षा -----	१६२
थावच्चापुत्र की प्रव्रज्या-----	१६४
सुदर्शन श्रेष्ठी-----	१६८
शुक परिव्राजक-----	१६८
शुक की धर्मदेशना-----	१६९
थावच्चापुत्र का आगमन -----	१७०

थावच्चापुत्र-सुदर्शन-संवाद -----	१७०
शुक का पुनरागमन-----	१७२
शुक-थावच्चापुत्र-संवाद-----	१७४
शुक की प्रव्रज्या-----	१७९
थावच्चापुत्र की मुक्ति -----	१८०
शैलक राजा की दीक्षा -----	१८०
शैलक का जनपद-विहार -----	१८३
शैलक मुनि की रुग्णता-----	१८३
शैलक की चिकित्सा -----	१८४
शैलक की शिथिलता-----	१८५
साधुओं द्वारा परित्याग -----	१८६
शैलक का कोप-----	१८७
शैलक का पुनर्जागरण-----	१८८
अनगारों का मिलन-----	१८९
उपसंहार-----	१८९
षष्ठ अध्ययन : तुम्बक	
सार : संक्षेप-----	१९०
उत्क्षेप-----	१९१
राजगृह में भगवान् का आगमन -----	१९१
गुरुता-लघुता संबंधी प्रश्न -----	१९१
भगवान् का समाधान-----	१९२
सप्तम अध्ययन : रोहिणीज्ञात	
सार : संक्षेप-----	१९४
उत्क्षेप-----	१९७
धन्य सार्थवाह की परिवारचिन्ता : परीक्षा का विचार -----	१९८
वधू-परीक्षा -----	१९९
परीक्षा-परिणाम-----	२०३
उपसंहार-----	२०८
आठवां अध्ययन : मल्ली	
सार : संक्षेप-----	२०९
उत्क्षेप-----	२१३
महाबल का जन्म-----	२१४
बल राजा की दीक्षा और निर्वाण-----	२१४
राजा महाबल-----	२१४
महाबल की दीक्षा -----	२१५

महाबल का मायाचार-----	२१७
तीर्थकर नामकर्म का उपार्जन -----	२१७
महाबल आदि की तपस्या -----	२१८
समाधिमरण -----	२२०
पुनर्जन्म -----	२२१
मल्ली कुमारी का जन्म-----	२२१
मोहनगृह का निर्माण-----	२२५
राजा प्रतिबुद्धि -----	२२६
राजा चन्द्रच्छाय -----	२३२
अर्हन्नक की सागरयात्रा-----	२३२
ताल पिशाच द्वारा अर्हन्नक की परीक्षा-----	२३४
राजा रुक्मि-----	२४३
काशीराम शंख-----	२४६
राजा अदीनशत्रु-----	२४८
राजा जितशत्रु -----	२५४
दूतों का संदेशनिवेदन -----	२५९
दूतों का अपमान-----	२६०
युद्ध की तैयारी -----	२६०
युद्ध प्रारंभ-----	२६१
कुम्भ की पराजय-----	२६२
मिथिला का घेराव -----	२६२
मल्ली द्वारा चिन्ता संबंधी प्रश्न-----	२६३
चिन्तानिवारण का उपाय-----	२६३
राजाओं को संबोधन -----	२६४
मल्ली कुमारी की दीक्षा -----	२६८
वर्षादान -----	२६९
इन्द्रों का आगमन-दीक्षोत्सव-----	२७४
केवलज्ञान की प्राप्ति -----	२७८
मल्ली तीर्थकरी की संघसम्पत्ति -----	२७९
सिद्धिप्राप्ति-----	२८०
नवम अध्ययन : माकंदी	
सार : संक्षेप-----	२८२
उत्क्षेप -----	२८५
प्रारम्भ -----	२८५
माकंदी पुत्रों की सागरयात्रा -----	२८५

नौका-भंग-----	२८७
रत्नद्वीप-----	२८९
रत्नद्वीप-देवी-----	२८९
देवी द्वारा धमकी-----	२९०
देवी का आदेश-----	२९१
माकंदीपुत्रों का वन-गमन-----	२९५
दक्षिण-वन का रहस्य-----	२९६
शैलक यक्ष-----	२९७
छुटकारे की प्रार्थना और शर्त-----	२९७
छुटकारा-----	२९९
जिनरक्षित का वध-----	३०४
जिनपालित की सकुशल गृहप्राप्ति-----	३०७
जिनपालित की दीक्षा, स्वर्गप्राप्ति-----	३०७
दशम अध्ययन : चन्द्र	
सार : संक्षेप-----	३०९
जम्बूस्वामी का प्रश्न-----	३११
सुधर्मा का उत्तर-----	३११
हानि-वृद्धि संबंधी प्रश्न-----	३११
भगवान् का उत्तर – हीनता का समाधान-----	३१२
वृद्धि का समाधान-----	३१२
ग्यारहवाँ अध्ययन : दावद्रव	
सार : संक्षेप-----	३१४
जम्बूस्वामी का प्रश्न-----	३१५
सुधर्मास्वामी द्वारा समाधान-----	३१५
आराधक-विराधक-----	३१५
देशविराधक-----	३१५
देशाराधक-----	३१६
सर्वविराधक-----	३१७
सर्वाराधक-----	३१७
बारहवाँ अध्ययन : उदकज्ञात	
सार : संक्षेप-----	३१९
उत्क्षेप-----	३२१
राजा जितशत्रु द्वारा भोजन की प्रशंसा-----	३२२
सुबुद्धि अमात्य का मौन-----	३२२
पुद्गल-परिणामन-----	३२३

परिखा का गंदा पानी-----	324
सुबुद्धि द्वारा राजा को तत्त्वबोध कराने का निश्चय-----	324
गंदे पानी का परिशोधन-----	324
राजा को पानी का उपहार-----	326
राजा की तत्त्वजिज्ञासा-----	329
राजा का श्रावकधर्म स्वीकार करना-----	331
सुबुद्धि की प्रव्रज्या-भावना-----	332
राजा का कुछ काल का अनुरोध-----	332
राजा अमात्य की दीक्षा-----	333
सिद्धिगमन-----	334
तेरहवाँ अध्ययन : दर्दुरजात	
सार : संक्षेप-----	334
श्री जम्बू का प्रश्न-----	336
श्री सुधर्मा का उत्तर-----	336
गौतम की जिज्ञासा : भगवान् का उत्तर-----	339
दर्दुरदेव का पूर्ववृत्तान्त-नन्द मणियार-----	340
नन्द की धर्मप्राप्ति-----	340
नन्द की मिथ्यात्वप्राप्ति-----	340
नन्द का पुष्करिणी-निर्माण-मनोरथ-----	341
राजाज्ञाप्राप्ति-----	341
पुष्करिणीवर्णन-----	342
वनखंडों का निर्माण-----	342
चित्रसभा-----	343
महानसशाला-----	344
चिकित्साशाला-----	344
अलंकारसभा-----	344
नंद की प्रशंसा-----	346
नंद की रुग्णता-----	346
नंद मणियार की मृत्यु : पुनर्जन्म-----	348
मैढक को जातिस्मरण-----	349
पुनः श्रावकधर्म-स्वीकार-----	349
मैढक की तपश्चर्या-----	349
भगवत्पदार्पण-----	349
मैढक का वन्दनार्थ प्रस्थान-----	349
मैढक का कुचलना-----	349

महाव्रतों का स्वीकार-----	३५२
देवपर्याय में जन्म-----	३५४
दर्दुरदेव का भविष्य-----	३५४
उपसंहार-----	३५४
चौदहवाँ अध्ययन : तेतलिपुत्र	
सार : संक्षेप-----	३५५
जम्बूस्वामी का प्रश्न-----	३५८
सुधर्मास्वामी का उत्तर-----	३५८
तेतलिपुत्र अमात्य-----	३५८
तेतलिपुत्र का पोष्टिला के साथ परिणय-----	३५९
कनकरथ राजा की राज्यासक्ति-----	३६२
सन्तान की अदला-बदली-----	३६३
राजकुमार का रहस्य-संगोपन-----	३६५
तेतलिपुत्र की पोष्टिला के साथ विरक्ति-----	३६६
सुव्रता आर्या का आगमन-----	३६७
पोष्टिला की मंत्र-तंत्र विषयक प्रार्थना-----	३६८
पोष्टिला का श्रावकधर्म-स्वीकार-----	३६९
दीक्षा की अनुमति-याचना-----	३७०
अनुमति की शर्त-स्वीकृति-----	३७०
पोष्टिला आर्या की स्वर्गप्राप्ति-----	३७१
कनकरथ का निधन-----	३७१
कनकध्वज का राज्याभिषेक-----	३७३
पोष्टिल देव द्वारा उद्धोधन का विचार-----	३७३
तेतलिपुत्र का आत्मघात का निष्फल प्रयत्न-----	३७५
पोष्टिल द्वारा उद्धोधन-----	३७७
तेतलिपुत्र को जातिस्मरण-----	३७८
तेतलिपुत्र की प्रव्रज्या-कैवल्यप्राप्ति-----	३७९
कनकध्वज द्वारा क्षमायाचना-----	३७९
सिद्धत्वप्राप्ति-----	३८०
पन्द्रहवाँ अध्ययन : नन्दीफल	
सार : संक्षेप-----	३८१
जम्बूस्वामी की जिज्ञासा-----	३८३
सुधर्मास्वामी द्वारा समाधान-----	३८३
धन्य सार्थवाह की घोषणा-----	३८३
धन्य का सार्थ के साथ प्रस्थान-----	३८५

उपयोगी चेतावनी -----	३८६
चेतावनी का पालन -----	३८७
उपसंहार-----	३८७
धन्य का अहिच्छत्रा पहुँचना-----	३८८
माल का क्रय-विक्रय-----	३८९
धन्य की प्रव्रज्या-भविष्य -----	३८९
निक्षेप-----	३८९

सोलहवाँ अध्ययन : द्रौपदी

सार : संक्षेप-----	३९०
जम्बूस्वामी का प्रश्न -----	३९३
सुधर्मास्वामी का उत्तर-----	३९३
ब्राह्मण-बंधुओं का सहभोज का निर्णय -----	३९३
नागश्री द्वारा कटुक तुंबे का शाक पकाना -----	३९४
स्थविर-आगमन-----	३९५
धर्मरुचि अनगर का भिक्षार्थगमन-----	३९५
कटुक तुंबे का दान-----	३९६
स्थविर का आदेश -----	३९७
परठने से होने वाली हिंसा-स्वशरीर में प्रक्षेप-----	३९७
धर्मरुचि को देवपर्याय की प्राप्ति-----	४००
नागश्री की दुर्दशा -----	४०१
सुकुमालिका का कथानक -----	४०५
सुकुमालिका का विवाह-----	४०८
सुकुमालिका का पति द्वारा परित्याग-----	४१०
सुकुमालिका का पुनर्विवाह-----	४१३
सुकुमालिका का पुनः परित्याग -----	४१५
सुकुमालिका की दानशाला -----	४१६
दीक्षाग्रहण -----	४१७
सुकुमालिका का निदान -----	४१८
सुकुमालिका की बकुशता-----	४१९
सुकुमालिका का पृथक् विहार-----	४१९
निधन : स्वर्गप्राप्ति-----	४२०
द्रौपदी-कथा -----	४२०
द्रौपदी का जन्म -----	४२१
नामकरण-----	४२१
द्रौपदी का स्वयंवर-----	४२२

स्वयंवर के लिए कृष्ण का प्रस्थान-----	४२४
हस्तिनापुर को दूतप्रेषण-----	४२५
अन्य दूतों का अन्यत्र प्रेषण-----	४२६
स्वयंवरमण्डप का निर्माण-----	४२८
आवास-व्यवस्था-----	४२८
स्वयंवर : घोषणा-----	४३०
स्वयंवर-----	४३१
पाण्डवों का वरण-----	४३४
विवाह-विधि-----	४३५
पाण्डु राजा द्वारा निमंत्रण-----	४३५
हस्तिनापुर में कल्याणकरण-----	४३७
नारद का आगमन-----	४३८
द्रौपदी पर नारद का रोष-----	४३९
नारद का अमरकंकागमन : जाल रचना-----	४४०
पद्मनाभ की दुर्लालसा-----	४४२
द्रौपदी-हरण-----	४४२
पद्मनाभ का द्रौपदी को भोग-आमंत्रण-----	४४४
द्रौपदी की गवेषणा-----	४४५
द्रौपदी का उद्धार-----	४४९
कृष्ण द्वारा देव का आह्वान-----	४५०
पद्मनाभ के पास दूतप्रेषण-----	४५१
पद्मनाभ-पाण्डव-युद्ध-----	४५३
पाण्डवों की पराजय-----	४५४
पद्मनाभ द्रौपदी की शरण में-----	४५६
द्रौपदी-समर्पण-----	४५७
वासुदेवों का ध्वनि-मिलन-----	४५८
श्रीकृष्ण का लौटना : पाण्डवों की शरारत-----	४६०
श्रीकृष्ण का पाण्डवों पर रोष : देशनिर्वासन-----	४६२
पाण्डुमथुरा की स्थापना-----	४६४
पाण्डुसेन का जन्म-----	४६५
स्थविर-आगमन : धर्मश्रवण-----	४६६
प्रव्रज्याग्रहण-----	४६७
भगवान् अरिष्टनेमि का निर्वाण-----	४६८
पाण्डवों का निर्वाण-----	४७०
आर्या द्रौपदी का स्वर्गवास-----	४७०

द्रौपदी का भविष्य -----	४७१
सत्तरहवाँ अध्ययन : आकीर्ण	
सार : संक्षेप-----	४७२
जम्बूस्वामी की जिज्ञासा-----	४७४
श्री सुधर्मा द्वारा समाधान-----	४७४
नौका-वणिकों का कालिकद्वीप-गमन-----	४७४
कालिकद्वीप के आकर और अश्व-----	४७६
अश्वों का अपहरण-----	४७९
कथानक का निष्कर्ष-----	४८२
विषयलोलुपता का दुष्परिणाम-----	४८३
इन्द्रियलोलुपता का दुष्फल-----	४८५
इन्द्रियसंवर का सुफल-----	४८६
कर्तव्यनिर्देश-----	४८९
अठारहवाँ अध्ययन : सुंसुमा	
सार : संक्षेप-----	४९१
उत्क्षेप-----	४९४
चिलात दास चेटक : उसकी शैतानी-----	४९४
दासचेटक की शिकायतें-----	४९५
दास चेटक का निष्कासन-----	४९६
दासचेटक दुर्व्यसनी बना-----	४९६
चोर सेनापति की शरण में-----	४९८
चिलात चोर-सेनापित बना-----	४९९
धन्य सार्थवाह के घर की लूट : धन्य कन्या का अपहरण-----	५००
नगररक्षकों के समक्ष फरियाद-----	५०२
चिलात का पीछा किया-----	५०३
सुंसुमा का शिरच्छेदन-----	५०४
धन्य का शोक-----	५०५
आहार-पानी का अभाव-----	५०६
धन्य सार्थवाह का प्राणत्याग प्रस्ताव-----	५०६
ज्येष्ठ पुत्र की प्राणोत्सर्ग की तैयारी-----	५०७
अन्तिम निर्णय-----	५०८
राजगृह में वापिसी-----	५०८
निष्कर्ष-----	५०९
उन्नीसवाँ अध्ययन : पुण्डरीक	
सार : संक्षेप-----	५११

श्री जम्बू की जिज्ञासा-----	५१३
सुधर्मास्वामी द्वारा समाधान-----	५१३
महापद्म राजा की दीक्षा : सिद्धिप्राप्ति-----	५१३
कंडरीक की दीक्षा -----	५१४
कंडरीक की रुग्णता-----	५१६
कंडरीक मुनि की शिथिलता -----	५१६
प्रव्रज्या का परित्याग-----	५१९
राज्याभिषेक -----	५१९
पुण्डरीक का दीक्षाग्रहण -----	५१९
कण्डरीक की पुनः रुग्णता-----	५२०
मरण एवं नरकगमन-----	५२१
पुण्डरीक की उग्र साधना-----	५२१
उग्र साधना का सुफल-----	५२२
द्वितीय श्रुतस्कन्ध १-१० वर्ग	
सार : संक्षेप-----	५२४
प्रथम अध्ययन-प्रास्ताविक-----	५२६
सुधर्मा का आगमन-----	५२६
जम्बू का प्रश्न -----	५२६
सुधर्मा स्वामी का उत्तर-----	५२७
काली देवी की कथा -----	५२८
काली देवी का पूर्वभय-----	५३०
द्वितीय अध्ययन-राजी देवी-----	५३८
तृतीय अध्ययन-रजनी देवी -----	५३९
चतुर्थ अध्ययन-विद्युत् देवी-----	५४०
पंचम अध्ययन-मेघा देवी -----	५४१
द्वितीय वर्ग-प्रथम अध्ययन -----	५४२
तृतीय वर्ग २-५ अध्ययन -----	५४३
तृतीय वर्ग-प्रथम अध्ययन-----	५४४
तृतीय वर्ग २-६ अध्ययन -----	५४५
तृतीय वर्ग ७-१२ अध्ययन-----	५४५
तृतीय वर्ग १३-५४ अध्ययन -----	५४५
चतुर्थ वर्ग-प्रथम अध्ययन, रूपा -----	५४७
चतुर्थ वर्ग २-६ अध्ययन -----	५४८
चतुर्थ वर्ग ७-५४ अध्ययन -----	५४८
पंचम वर्ग-प्रथम अध्ययन, कमला-----	५४९

पंचम वर्ग शेष ३१ अध्ययन-----	५५०
षष्ठ वर्ग-१-३२ अध्ययन -----	५५१
सप्त वर्ग १-४ अध्ययन-----	५५२
अष्टम वर्ग १-४ अध्ययन-----	५५३
नवम वर्ग १-८ अध्ययन -----	५५४
दशम वर्ग १-८ अध्ययन -----	५५५
परिशिष्ट-----	५५७
उवणयगाहाओ	
व्यक्तिनामसूची	
स्थलविशेषसूची	